आधुनिक संस्कृत विद्वान् भट्टमथुरानाथ शास्त्री द्वारा रचित 'कुण्डलियाँ' ।

कुण्डलियाँ एक छन्द है । काव्य की गति, यति, मात्रा वर्न, गण आदि की निश्चित अवस्था को छन्द कहते हैं । छन्द वह साँचा है जिसमें कवि अपने शब्दों को ढालकर कविता का रूप देता है । विविध (मात्रिक, वर्णिक एवं लयात्मक शब्दों) छन्दों में से कुण्डलियाँ अर्धसममात्रिक छंद है । इसमें 6 चरण होते हैं ।

कुण्डलियाँ छन्द में रचित सभी पद्य न केवल मानव जीवन से संबंद्ध हैं बल्कि प्रासंगिक भी हैं ।

कुण्डलिन्यः(कुण्डलियाँ)

भारतविभा

आर्यवसुमती.....दीप्तिमदादियमार्यवसुमती ।(In Book)

इसी आर्यभूमि पर सर्वप्रथम ज्ञान की ज्योति फूटी थी । तब इसने विश्व में ज्ञान राशि का बीजारोपण किया । इसी संविद् के बीज ने मानव का कल्याण किया था, तभी पैदा हुई सभ्यता की अवधारणा और विश्वबंधुत्व की अवधारणा जिसने जगत् को सभ्यता की परिभाषा दी । मानवता क्या होती है ? किस प्रकार विश्व को एक नीड़ की तरह रखा जा सकता है, यह ज्योति जिसने जगाई और उस ज्योति को द्वीप द्वीप में फैलाया यह वही आर्यभूमि है ।

विद्रुमेन्द्रनीलमणि.....भारतवसुन्धरा ।(In Book)

यह भारत वसुंधरा पृथ्वी ग्रह की शोभा है । इस पर विद्रुम भी है, इंद्रनील भी, मोती है, माणिक्य भी, ग्रेनाइट हैं तो हीरे भी, चाँदी है तो सोना भी, लोहा है तो ताँबा भी, हरताल है तो गेरू भी, हिंगलू भी । न जाने किन-किन चीजों के खाने हैं यहाँ, जहाँ से दुनिया संगमरमर की मूर्तियाँ बनवाकर ले जाती है । यही वह धरती है जहाँ जंगल-जंगल में हथनियाँ कुंजर शिशुओं को जन्म देती रहती है । मलय पवन जहाँ सुरभित झोंकों से जनजीवन को महका देता है वही यह धरती है ।

विश्वमण्डले.....भारतविभा विभातु ।(In Book)

इस आर्यभूमि की विजयपताका विश्व में गौरव से फहराती रहे, मानव सभ्यता का आदिम उपदेशक यह देश दुनियाँ को सभ्यता सिखाता रहे, हमारे राजनयिक कूटनीति के

कुचक्रों को दबाकर दुष्ट माफिया को दूर कर जन-जन को प्रेमभरा लोकतंत्र दे। सब तरह की पराधीनता समाप्त कर स्वतंत्रता के अमोघ मंत्र से भारत फिर चमकने लगे।

नीतिवीथी

बुधजनों से कवि सूक्ति को श्रवण करने का आग्रह कवि ने मनोरम रूप में इस प्रकार किया है-

कविसूक्तिं.....श्रृणुयुः कविसूक्तिम् ।(In Book)

कवि की बात अर्थात सूक्ति को सुनना चाहिए क्योंकि कविता रस को जानने वाले बुधजन ही कवि सूक्ति को आदर दे सकते हैं। सुधीजन ही गुणज्ञ होते हैं। गुणहीन तो कवि के सुभाषित का अनादार ही करेंगे। अतः आप कवि की सुक्ति को ध्यानपूर्वक सुनें, विचार करें तथा आदर पूर्वक कवि की नीति संकलित काव्य के संदेश को अपने जीवन में धारण करें। क्योंकि जीवन के लिए उदात्तभाव तथा सुमधुर व्यवहार नीति के रूप में कवि सूक्ति से निकलता है। नीति से जीवन सार्थक होता है। अतः नीति युक्त कवि की सदुक्तियाँ वस्तुतः सुनने योग्य हैं। कपटाचरण के विषय में भट्टजी ने कहा है-

माया.....विधेया माया ।(In Book)

कपटतापूर्ण आचरण नहीं करना चाहिए। इससे लाभ होने के बजाय हानि ही अधिक होती है। मित्र, महीप(राजा), यति, गुरुजन, गुरुपत्नी, चिकित्सक नौकर-चाकरों, शिष्यों और सभाजनों के साथ कपट नहीं करना चाहिए। छल, चातुर्य या कपट करने से उक्त जनों के मन में छली व्यक्ति के प्रति आदर नहीं रहता है। अतिथियों, विश्वस्तजनों और कवियों के प्रति छल भी छली व्यक्ति की छवि को धूमिल करता है।

धन की महिमा अथवा मुद्रा का महत्व बताते हुए इसके विभिन्न रूपों के बारे में भट्टजी जी कहते हैं-

मुद्रामधिगत्यैव.....धन्यैषा मुद्रा। (In Book)

मुद्रा का जीवन में बहुत महत्व है। वणिग्(व्यापारी) के लिए यह आवश्यक है। राजा की मुद्रा राजपत्रों में मोहर के रूप में अत्यंत जरूरी है। योगिजन मुद्रा नामक गुरु के द्वारा दिया गया आभूषण कान में धारण करते हैं जिसका महत्त्व बहुत अधिक है। प्रेमियों के लिए

मुद्रा(अंगूठी) प्रेम के इजहार के लिए आवश्यक है । देवगण मुद्रा से, धेनु आदि से उपासना स्वीकारते हैं । इस मुद्रा को पाकर कवि-व्यापारी-राजा-सन्यासी-प्रेमी-देवता सभी मुदित होते हैं, कोई भी कुपित(क्रोधित) नहीं होता । भट्ट जी ने पर निंदक विषयक नीति निर्देश इस प्रकार किया है-

निन्दां.....त्यज निन्दाम् । (In Book)

परनिंदा नहीं करनी चाहिए । यद्यपि(समाज में) सर्वत्र निन्दक(व्यक्ति) मिल जाते हैं । पर नीतिविद् परनिंदा से प्रसन्न नहीं होते अपितु वे परनिन्दक के हृदय का छोटा(लघु) और उसे मंदप्रकृति का मानते हैं, साथ ही वे उन पर विश्वास भी नहीं करते हैं । इसलिए भट्ट जी कहते हैं मेरी बात पर कान दें । किसी की निंदा न करें । निंदा का त्याग करें । राजा, कर्मचारी, राज्यमंत्री इत्यादि में कौन-कौन से गुण होने चाहिए- इस बात पर विचार करते हुए कहते हैं-

राजानिजजन.....रमयति राजा ।(In Book)

राजा प्रजा का रंजन करता हुआ संपूर्ण जगत् को अपने वश में कर लेता है । उसके नयन नवोदित चंद्रमा के समान आनंदित होते हैं । चंद्रसदृश प्रमुदित राजा की प्रजा भी उनके प्रति अनुरक्त होती है, राजभक्त प्रजाजन ऐसे राजा के लिए अपने प्राण तक न्योछावर करने के लिए तत्पर रहते हैं । केवल बल से कोई भी सम्राट चिरकाल तक शासन नहीं कर सकता और न ही प्रजा नम्र रह सकती है । बल्कि निर्मल शासन से ही राजा प्रजा के हृदय में अपनी जगह बना सकता है ।

'नीतिवीथी' में इन्होंने मंगलाचरण के उपरांत कवि सुक्ति श्रवण की अनिवार्यता की ओर बुधजनों का ध्यान आकृष्ट किया है । साथ ही उन नीतिवचनों को आचरण में उतारने का आग्रह किया है । कपटयुक्त आचरण से बचने एवं उससे होने वाली हानि की ओर भी इशारा किया है । मुद्रा के विविध रूपों एवं जीवन में मुद्रा का महत्त्व प्रतिपादित करते हुए परनिंदा से बचने की सलाह भी भट्टजी ने दिया है । क्योंकि परनिंदक की तुच्छ एवं ओछा समझा जाता है । राजा, मंत्री एवं कर्मचारी के गुणों को बताते हुए लोकतंत्र में उसकी महत्ता का भी प्रतिपादन किया है ।

सज्जन=दुर्जन=स्वार्थसारामैत्री

सज्जनमैत्री.....सज्जनमैत्री ।(In Book)

सज्जन की मित्रता निरंतर भरण पोषण करने वाली तथा क्रमशः वृद्धि को प्राप्त होती हुई दोषों का हरण कर लेती है साथ ही निर्गुण में भी गुण का आधान और निर्वेद का निर्वासन कर मन को सम्यक् प्रसन्नता प्रदान करती है । सज्जन की मैत्री स्नेह से निरंतर संपन्न सत्कार्यों के द्वारा उत्साह का वर्धन करने वाली तथा जड़ता को समाप्त करने वाली होती है ।

दुर्जनमैत्री.....दुर्जनमैत्री ।(In Book)

अर्थात् आजकल स्वार्थ की दोस्ती रह गई है । काम पड़ा तो बेहद प्रेम का प्रकटन, काम न बना तो प्रेम बिखरना शुरू । ऊपर से निष्कपटता का मुखौटा, बोली में चाशनी-सी धुली, हृदय में गहरे छलछिद्र । पीठ पीछे उसी दोस्त के विरुद्ध षडयंत्र- यह है स्वार्थ की प्रीति का चिट्ठा ।

स्वार्थसारा मैत्री की चर्चा करते हुए ये कहते हैं कि यह दो प्रकार की होती है- **सज्जनमैत्री एवं दुर्जनमैत्री ।** सज्जनमैत्री जहां शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से पूर्णिमा के चाँद सदृश वर्धनशीला है वहीं दुर्जनमैत्री कृष्णपक्ष की प्रतिपदा से अमावस की ओर प्रस्थान करने वाली ह्रासयुक्ता है । दुर्जनों की मैत्री को अन्योक्ति के माध्यम से स्वार्थ की प्रीति बताया है । माली की हमारे जीवन में(जीवन को एक नया रूप देने में) महत्वपूर्ण भूमिका होती है । उसके अभाव में श्रीहीन बगिया-सी हमारी जिंदगी हो जाती है और उसका कारण कविवर भट्टजी पोषक एवं संचालक की अज्ञानता को मानते हैं । सूखे, कुम्हलाए, मुर्झाए पौधों को देखकर जिस प्रकार माली को कष्ट होता है वैसा ही कष्ट निर्माता को होता है जब वह अपनी रचना को विद्रुप अवस्था में पाता है ।

मालाकारः

मालाकार.....हे मालाकारक ।(In Book)

सुनो भैया माली! तुमने बड़े चाव(प्यार) से इस बाग में चुन-चुनकर करीने से पेड़ लगाए थे, मेहनत से पानी दिया था(सींचा था) बड़े यत्नपूर्वक पालन पोषण करने पर उसमें फल-फूल आया । पर अब क्या देख नहीं रहे कि एक अनाड़ी के हाथ में पड़कर उन्हीं वृक्षों की क्या हालत हो गई है । मुरझा रहे हैं बेचारे ।

धाराधर : बादल

धाराधर.....किं बहुधाराधार ।(In Book)

सुनो भैया बादल, धरती पर थोड़ा पानी क्या डाल दिया, इस अहसान को जताने के लिए गरज-गरज कर आकाश सर पर उठा लिया, गर्व से फूल गए । देखो, भूमि तो हरी-भरी हो गयी, परंतु नदियाँ इतनी दुबली है, कुंए-बावड़ी भी भरे नहीं हैं । वह तो छोड़ो, तुम्हारी आस लगाए बैठा चातक यदि प्यासा ही रह गया है तो बताओ तुम्हारे अस्तित्व का क्या फायदा ?

'धाराधर' कविता में इन्होंने यह बताने का प्रयास किया है कि 'जो गरजते हैं वो बरसते नहीं ।' बादल उमड़-घुमड़ कर, गर्जन-तर्जन कर थोड़ा-सा जल बरसाकर अपने कर्तव्य की इतिश्री मान बैठता है, परंतु उससे क्या फायदा जब वर्षा की आस में प्यासा चातक प्यासा ही रह गया । जबतक पृथ्वी पर सर्वत्र हरियाली-खुशहाली न हो तो बादल के बरसने का क्या प्रयोजन ?